टीले वाले बाबा

सम्पादकीय

टीले वाले बाबा का मन्दिर चांदनपुर गांव के अतिनिकाट है। भगवान महाशिवर की जिस मूर्ति के अविश्वास की छवि पूरे विश्व में है। भूर्गम से उसकी प्राप्ति के समय में अतर्कित जिव्वदनी प्रचारित है। कहा जाता है कि एक ग्वाला चोर गाया छाता था। गाय बंगले से चर कर जब चर लौटती हो उसके स्तन से दूध बाली मिलते। एक बिंदु ग्वाले ने गाय का पीखा किया और देख कर विश्वास हुआ कि गाय एक टीले पर खड़ी है उसके स्तनों में दूध स्वतः छार रहा है। इसी बिंदु मन में अनेक प्रकार के लोगों के स्तन से ग्वाले ने टीले को छोड़ता अर्थ विश्वास किया कि आत्मा सुधार ही जाता। सावधानी से खेल आता सुक भी वह सावधान रहा गया। और निजी हटाते ही मूर्ति प्रताड़ हो गई। भूर्गम से भगवान प्राप्त हुए है, इस प्रकार की चर्चा चाही और कैल गई। दृढ़-दृढ़ से दर्शनीय विचारक आने लगे। मेला बुझे लगा। अविश्वास में अवज्ञा हो जाकर अनेक व्यक्ति मनोकामनाएं ले कर आने लगे।

उन व्यक्तियों की मनोकामना पूर्ण होने के समाचार चारों दिशाओं में फैला गया। अतर्क कवि जी महादेव ने मन्दिर निर्माण करना तथा रथ में बैठकर ले जाने लगे तो रथ अजब हो गया। जब ग्वाले ने रथ की हार लगाया तब रथ आए बड़ा तथा समाजों पूर्वक श्री जी मन्दिर में ला कर विश्वास किए। महादेव जी के यात्रा के लिए जाने वाले नर नारियों के मन में एक अद्वैत समृद्धा, उघम और पूण्य मानव उत्तम होते है।

यहाँ हर वर्षा के भवन के नवनाम जिनेवा भगवान के वर्षन करने और अपने श्रद्धासुमन चढ़ने आते हैं।

अविश्वास क्षेत्र में अनेक वर्षानीय स्थल भी है। मन्दिर जी के उत्तरीय मार में कृष्णा बाई जी का आश्रम है जहाँ पर विशाल मन्दिर भी है। इस पावन तीर्थ के दर्शन के साथ कवि का ऐतिहासिक पर्यटन मन्दिर एवं श्री कल्पना बाई जी द्वारा स्थापित आदर्श महिला विवाहालय भी अद्वैत है। 

गिरीजा नदी के धरोहर निकाले पर श्रीमान नगर है। जहाँ २८ फुट ऊंच श्रीमान धामी के विशाल मूर्ति के अतिरिक्त २८ तीर्थकर्मी तथा उनके आचार देवताओं की मूर्तियाँ विश्रामन हैं। जिसकी गण: पताका चारों और कैल रहा है। हम सब इस कृति से वहाँ के वर्षन करते।

पाठकों से अनुरोध है कि वे जैन चित्र कथा के साथ सना कर सम्पादक ज्ञान का अनुरोध करें।

धर्मचंद्र शास्त्री

प्रकाशक :- आचार्य धर्मचंद्र ग्रन्थस्थान गोदावरी डांस एवं राष्ट्रीय विकास समाधान चंद रोड जयपुर

सम्पादक :- धर्मचंद्र शास्त्री

लेखक :- श्री भिविलाल जी एडवोकेट गुला

वित्तकर :- वनसिंह जयपुर

प्रकाशन वर्ष १९८८ मई वर्ष २ अन्क ७ मूल्य : १० रुपये

स्वतंत्रभिक्षु मुनि, प्रकाशक तथा सम्पादक धर्मचंद्र शास्त्री द्वारा जुलॉन्न प्रेस से छप कर धर्मचंद्र शास्त्री ने गोदावरी डांस एवं राष्ट्रीय विकास समाधान चंद रोड जयपुर से प्रकाशित की।
चंदनपुर गांव में चतुर्वेदी नाम का गाता रहता था। उसकी पत्नी का नाम तारसी था। उसके पास एक माया थी, जिसे वह धौरी कह कर युक्तरता था...
कसा आज गाय का कूद लगाना भूल गये

गाय के बाहर में कूद हो तो निकालें।

गायके द्वारे से एक छाँट भी कूद नहीं निकलता...चटुचा है।

कैसी बाले करते हैं?
अपने गाय से कूदू की चोरी कौन करता?

मैं कुछ सबब गाय की लिपि का रुझान वाली करारा। वे कुछ दिन कूद नहीं चोरी करता।
आज का दिन भी बैकार गया....

किसी के चतुरा मंगल में खूंटू लिए गाय की खुशवाली कहना छुड़ा दिसा और गाय
दसरी रही सीधार के समय एक दीले पर आ
कर लगे हैं।
हो गईं और
उसका साथ
भुज दीले
पर भर
गया।

अरे! आभारन
विना लगाये ही
गाय का दूध दीले
पर नहीं देना है।

चतुरा घर जौट कर पत्नी से कहता है।

भाग्यवान!
पता लगा लिया कि गाय
कौड़ा करता है।

के बाहर
पता लगा
कर ही लौट
आये। इतना
बढ़ा लगा
किससे?
अंगे ऐसे?
कौन है?
बूढ़ा चोर?
व्यक्ति बोलने लगी हो, मेरी भी तो सुन।

अच्छा सुनाओ !

एक टीले पर आय का ज्युड अपने आप भर जाता है।

मैं सच कहता हूँ।

ऐसी अन-सुनी चटक तो मेरे जीवन में कभी नहीं सुनी। क्यों भूत बालटे हो?

मैं कल आकर टीले की खुदाई करेंगा।

मैं तुझे वहां नहीं जाने दूँगा। सुभेने लो भूत-प्रेत का चटका सुभभ में आता है।
भग का भूल होता है। में भूल पैली से नहीं कहता।
लेकिन लोग जाने कुछ नहीं कहते।
तुम भी चलो। होने के मिले कर तो तीसे को लें।

हूँसे दिन सबब हलकी और दल्ला टाले का सीधे टप्पो... साध्य हुई।
अब लोट चलो। आज इतना ही कायम है।
सहसा दौड़ी गाय तीनों पर शांति लगाई है और उष्ण दूध
तीनों पर करने लगता है।

तीनों में कोई पाक्र कब्जा है।
भूत प्रेत दूध नहीं मांगते।

दूसरे दिन सुबह, चन्दन, और लकमी तीनों को फिर से देखने आये...।

कोई कह रहा है... "सावधान! से सोचो।
इससे सुनने और पीने का बिल्लू है।"

में तीनों में कोई भी सुना नहीं दिखता है!

द्यानपूर्वक सुनो।

कहते हैं
सुन ने दिन आए आँले हैं।
चतुर्या और लक्ष्मी चीटे नीले भैंडी सहलै हैं। मूर्ति का सिर दिखाई देने लगता है।

चतुर्या: मूर्ति दिखाई दे देंती है।

ो: दीले बाले बाबा की जय।

चतुर्या और लक्ष्मी की आवाज सुन कर आपा पास के गायदें फूकती हो गये।

चतुर्या: तुम्हें जैसे आता इस दीले में कौन है?

मेरी-धोंगी गाय टीले पर होत पुढ़े धारते थे।

चतुर्या पुढ़ गांव के सभी कोल मूर्ति निकालने के कन्ने पाकर भूजड़ के भुजड में दीले पर पुढ़े लगे।

मूर्ति किसने निकाली?

चतुर्या: मूर्ति किसने निकाली?

अपने चतुर्या बाबाजी ने निकाली।
देखता को सी क्षेत्र के हाथों निकलना था?

भगवान की पृष्ठ में सब
मनुष्य समाज है। अधा
आदर्श वह है जो उदय
कार करें।

अपने
कितना
चित्र का वान है
ना माहा खाना
है और न भाषा
पूरी है।

मूर्ति के थाने मे जाय लगा हुआ है।
साभी जाय तनकान कर लगे हैं,

दीर्घ तारे बांधा की जय।

दीर्घ तारे बांधा की जय

दीर्घ तारे बांधा की जय

दीर्घ तारे बांधा की जय
भगवान वहां टूट की मौजूदा की जीवनी हलाई, बहुत लोग दर्शन करने आते हैं | सबको सुगाया करेंगे |
एक रात्रि में रानी त्रिबंधा ने अनुपम सोलह सप्ताह देखे।
राजा-रानी चर्चा करते हुए......
मे बहुत प्राणन है।
यह हमारे लिए बड़ा सौभाग्य की बात है।

स्वामी। मैंने रात्रि के अन्तिम
प्रहर में सुखद सोलह सपनों का सब सवारकर बलाते हैं।

देवी गृहका।
तुम महान पुत्र की नाँक
बनाने को तैयार है। हमारे पुत्र संसार के कल्याण के हेतु।

चैत्र सुधी 15 के दिन वर्चुआमन (महावीर) का आगम हुआ।
सन्तुला देवी, देवता संत देवी दोनों गाने रहे।

पुत्र नमस पर
वर्चुआमन का जन्म संसार के हिदाये, सुख, शानि
का सेवें लेकर आया है।

चैत्र सुधी 15 के दिन वर्चुआमन (महावीर) का आगम हुआ।
सन्तुला देवी, देवता संत देवी दोनों गाने रहे।
एक दिन राजकुमार वर्धमान बच्चों में अपने साथियों के साथ खेल रहे थे। एक भयंकर वर्धमान निकला, तभी बच्चे भूग गये... परंतु मैं निकल ही कार्य चाही नहीं है!

ध्रुव ने देवता का काम धारण किया और कहा, 

मे संघर्ष नामक देवता है। तुम्हारी परशुराम परंपरा आया था। वर्धमान तुम बड़हाल में कहानी हो।

पूर्व! तुम्हारी विभायथोंऽ आयु हो गई है। इस वंशों का नामक सुन्दर साकुमारी से तुम्हारा विवाह करना चाहते है।

वर्धमान महाकवि ने आज़ादी से राजा सिंहदार से बात करते हैं।

ध्रुव प्रकटजी! मेरे लिए विवाह संविधान के समान है। मे संसार के प्राकृतिकों की अन्वेषण के लिए आत्म कर्त्तव्य के लिए सन्नाटी बनना चाहता हूँ।

ध्रुव कुमार ने धर्म के समान है। मे संसार के प्राकृतिकों की अन्वेषण के लिए आत्म कर्त्तव्य के लिए सन्नाटी बनना चाहता हूँ।
प्रिय वधुराम! तुम इंक्लैते पुत्रहो, यह हाथयो कौन साधारण? अपने माता-पिता को खोज कर न जाओ। हमारे दुःख-सुख के साथी बनो।

जी! संसार दुःखी है। सम्पूर्ण भारत वर्ष में हिंसा, नागाशाह, वन्य बच्चे ही हैं। यहीं देश की भलाई के लिए मुझे वन के काम मे की आनुमति प्राप्त करिए।

पुत्र वधुराम! हमारा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है! जाओ ओर चक्करए की कृप्या का मार्ग दिखाओ।

वधुराम महावीर चाले पालकी में रैट कर कालक्रम लागक संबंध की और चलाना होगये......
भाल जनन में क्षणशुद्ध उत्तर कर। क्षणशुद्ध पर वेंट गये। क्षणशुद्ध महावीर में बारह वर्ष तक कठिन तपस्या की।

वद्दीर्मान महावीर ने अनेक गांवों, गाँवों और जंगली प्रेमियों की यात्राकी। महावीर की महानजोग ने समस्त लोगों के पास परिवर्तन प्रचार किया। पादप्रजनन कोई किलोद नहीं किया।

श्रमण महावीर के सम्पूर्ण भारतवर्ष की पद्याय भ्रमण की।
उजाडियो के समय
से राजाकुमारी के नामक
राजस्तान के अन्य जानकारी
को उराने की कोशिशा
की पह निकट रहे।

भूजुगुला नौरी के
चिनाड़े सहाज़ेरे से
केवल अप्रास्क क्षणा
उनके मस्तक के ऊपरी
और फूल पक्षी
इसका प्रभाव है।

भगवान ने
केवल अप्रास
किया। उसके बांधे
की कठा सुनाई।

हां बेसी!

केवल अप्रास करने के बाद
30 वर्ष तक भगवान महालले ने संसार की भलाई के लिए उपदेश दिया।
भगवान महावीर के कुछ उपदेश की हों।

मानी साज पर कथा कहना गर्दों, भी महावीर कहना इस प्रकार हिंसा, भूत, चोरी, कुंभल आदि विपदार्थ को त्याग करना ही महावीर के प्रमुख उपदेश है।

पदयात्रा करते हुए सीधी करते हिंसा, भूत, चोरी, कुंभल और पोतखों का त्याग करना ही महावीर के प्रमुख उपदेश है।

भगवान महावीर के देखे हुए से एक भूत, निकट की आंत, आकाश में विलेन हो आए तुम्हें भी विलेन हो आए। और निद्रण को प्रसंस हुए तो जन्म तलवेक के बेठने से मुक्त हो आए।

साहित्य चर्चाएं में नस्तिक से चित्र की भीति हिंसा रही है।

मे बहुत गर्दों आली है, भावाकी देवा से समय ही नहीं मिलता।

यह बहुत महान दृष्टि है, चलिए, तुम जनवरों अंदर घर बनवा दे।

मुक्त कितने आदि तो जस्ती है, उनकी बनाया सकता तो मे अंदर बनना देता हूँ।
श्रीमान की जैसी इच्छा मैं अंकित नहीं बनाने दूंगी, देवता परारे हो जायेगे।

देवता कब तक बिसा अंकित के देंगें?

भगवान आले।

लड़की! सेह जी सात्तु कहते हैं, बांबा बड़सान गाँवी साद्री में ऐसा कब तक रहेंगे?

जब तक तुम्हारी बाल सुन कर बहुत सुख मिला। मैं इतनी ही बड़ा सुरदो सुनिए बाबाकरणा।

सेह अल्फर चहने में महादेव जी का सुनिए अंकित बाबा दिखा।

सेह अल्फर कहने में महादेव जी का सुनिए अंकित बाबा दिखा।
टीखे के आमने-बैलों में खुशुता एक ताड़ा खड़ा है, जो गुलाम सुजाहो की भीड़ करता है! सभी दोस्त अववान महावीर की जय प्रभावल कर रहे हैं।

अंद्रे वाले घासा की जय
अपवान महावीर की जय

मूर्ति को रथ में पिलामाण किया गया... सबको जी ही सोते अर्थरंग व अन्य गायमान्य व्यक्तियों के साथ साथ आश्चर्यचकित है... अह! वे क्या? रथ अधान हो गया! चलाता ही नहीं?

अटे! आज चुड़ा महीना देखा रहा है?

चलाया तरह से बड़े बाबा की सोचा कर रहा है! उसकी इतिहास के बिना, उसके समन्वय में कैसे आचरणी?

उसकी इतिहास के बिना, उसके समन्वय में कैसे आचरणी?
लेखनी चतुरा के घर जाते हैं
चतुरा! ओ! चतुरा!

चन्द्र जी घर के भीतर प्रवेश करते हैं और कहते हैं
चतुरा, तुम्हारे के समाचार क्या कुछ हो रहा है? क्या भये बाबा का मेंहदी में
भाइं बेहाल गए?

मेडिया से बाबा के जाते ही मैं अनाथ हो
जाऊँगा.
श्री माता सती सुनकर मैं नहीं आता कि मैं क्या करूँ? माता आपने बताया है। कह दुख से हम मीना गुजारी का मन्दिर में कैसे जाएंगे?

मैंने कहा था कहां था देवता पराभु हा कहांगे?

महावीर सब का देवता है
केवल जैनियों का नहीं।

श्री माता !
अब हमें कोई दुख नहीं है।
वच्चे का हाथ कूलके ही रथ आगे बढ़ने लगा।

अदे! रथ पूरा की तरह हुक्का हो गया।

चद्दासान महालाॅट की प्रतिमा रथ में बिछानेना है... रथ चलने लगा।

स्त्रियाँ गाती हैं, सुख, सुदाहा, नित्य सहाया। महालांट उसका रस्तःवाला.
जैसी एवं क्याकों मीना, गुजर नर-नारी
रथ के जुलूस के साथ चल रहें हैं।
फुलच गाते है...

जग-जन का
भावलेई है।
हरी शाबकी
शीता है।
महादीर कार्य एवं जुलूस
भंडक के पास पहुँचा... हर्षिलासपुर्णा
अयोध्या से आकाश गंज उठा।

भगवान महादीर की आय तीले गाले बाबा की जय
भगवान महादीर की जय! तीले गाले बाबा की जय!!
जैन चित्र कथा के माध्यम से बाल पीढ़ी का समग्र विकास

भगवान महावीर के सिद्धान्तों एवं उपदेशों का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार कर जन साधारण के हृदय में नैतिक सदृश व मानवीय मूल्यों की पुन: स्थापना करने; देव, गुरु, शास्त्र के प्रति कर्त्तव्य का बोध कराए दर्शन कर धर्म प्रभावना व संस्कृति संरक्षण के लिए नयी पीढ़ी को अच्छी शिक्षा देने हेतु आधुनिक शैली में कथा साहित्य का प्रकाशन किया जा रहा है। जैन पुराणों में असंख्य कथाएँ हैं-उनमें से अधिकांश उपयोगी व सुविद्य कथाओं को चित्र भिष्य के माध्यम से प्रकाशित किया जा रहा है-जिससे अत्यधिक सरस व लालित्यपूर्ण भाषा में प्रस्थापित किया है। ये कथाएँ बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उनके हृदय को उदार व विशुद्ध बनाती है तो कहीं भी बुद्धि में स्पष्टता का संचार करती हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि धर्म के अंकुर, बच्चों के सरल हृदय में संदेव के लिए जड़-जमा लेते हैं। निश्चय ही ये बच्चे धर्म का पालन करते हुए मोक्ष मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता-पिता व अभिभावक गण एक बार जैन चित्र कथा को अपने बालकों के हाथ में रख कर दें-बालकों को आनन्द से पढ़-देखकर वे अवश्य धन्यता का अनुभव करेंगे।

प्रकाशन सहयोगी

श्री विजय जैन दरियागाज दिल्ली
श्री जय गोपाल राजीव जैन चावड़ी बाजार दिल्ली.
जैन चित्र कथा

आठ वर्ष से ८० वर्ष तक के बालकों के लिए

ज्ञान वर्धक, धर्म, संस्कृति एवं इतिहास की जानकारी देने वाली स्वस्थ, सुन्दर, सुशील वर्धक, मनोरंजन से परिपूर्ण आगम कथाओं पर आधारित जैन साहित्य प्रकाशन में एक नये युग का प्रारम्भ करने बाली एक मान्त्र पत्रिका

जैन चित्र कथा

ज्ञान का विकाश करने वाली ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद और चित्र
निर्माणकारी सरल एवं लोकप्रिय सचित्र कथा जो बालक वृद्ध आदि सभी
के लिए उपयोगी अनमोल रचनाओं का खजाना, जैन चित्र कथा की आप स्वयं
पढ़े तथा दूसरों को भी पढ़वें

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला

संचालक एवं सम्पादक—धर्मचंद शास्त्री
श्री दिगम्बर जैन मंदिर, गुलाब वाटिका लोनी रोड, जि०
गाजियाबाद
फोन 05762-66074